6

''परमेश्वर का धन्यवाद हो, हम विजयी हुए!''

नये नियम की हर पुस्तक का अपना एक विशेष दृश्य है। प्रेरितों के काम पुस्तक में सक्रिय मसीहियत की तस्वीर है। फिलिप्पियों आनन्दित मसीहियत के बारे में बताती है। याकूब व्यावहारिक मसीहियत से भरी है, जबकि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का विषय *विजयी* मसीहियत है!

''विजय'' के लिए यूनानी शब्द का क्रिया रूप *Nikao* प्रकाशितवाक्य के बाइस अध्यायों में सत्रह बार मिलता है। *निकाओ* का अनुवाद आम तौर पर ''पराजित करना,'' ''जीतना,'' या ''विजयी [होना]'' किया जाता है। अध्याय 5 में यीशु को ''जयवंत हुआ'' दिखाया गया है (आयत 5)। 6:2 में हम पढ़ते हैं कि ''वह जय करता हुआ निकला कि और भी जय प्राप्त कर ले''; अर्थात ''उसने पहले ही कुछ विजयें प्राप्त कर ली थीं तथा वह और विजय पाने के लिए निकला'' (CEV) अध्याय 12 में हमें बताया गया है कि मसीही लोग ''मेमने के लहू के कारण [शैतान पर] जयवंत हुए'' (आयत 11)। अध्याय 15 में यूहन्ना ने परमेश्वर के सामने विजयी होकर खड़ी कलीसिया की तस्वीर दिखाई: ''और मैंने ... [उन्हें] देखा, जो उस पशु पर और उसकी मूरत पर और उसके नाम के अंक पर *जयवंत* हुए थे, ...'' (आयत 2)। किसी ने कहा है कि प्रकाशितवाक्य का संदेश है ''हम विजयी हुए! परमेश्वर का धन्यवाद हो कि हम विजयी हुए!''

पृष्ठभूमि के इस अन्तिम पाठ में हम विजय के संदेश और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में इसके विकसित होने के ढंग पर चर्चा करना चाहते हैं।

संदेश पर चर्चा

तीन भागों का संदेश

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में विजय के संदेश के तीन भाग हैं:

(1) भलाई और बुराई में झगड़ा (दो गवाहों का चित्र देख),

(2) भलाई की दिखाई देने वाली पराजय[1] (उनके शव चौक में पड़े रहेंगे का चित्र देखें) और

(3) अनन्त भलाई की विजय (वे बादल पर सवार होकर ... स्वर्ग पर चढ़ गए का चित्र देख)

इस तिहरे संदेश के उदाहरण के रूप में अध्याय 11 के दो गवाहों की कहानी देखें। पहले हम दो गवाहों द्वारा परमेश्वर का संदेश सुनाने पर भलाई और बुराई में झगड़ा देखते हैं (आयतें 3-6)।

अथाह कुण्ड के पशु द्वारा दो गवाहों से युद्ध करने पर, भलाई स्पष्टतया हार जाती है:

> और ... वह पशु जो अथाह कुण्ड में से निकलेगा, ... उनसे लड़कर उन्हें जीतेगा और उन्हें मार डालेगा और उनकी लोथें उस बड़े नगर के चौक में पड़ी रहेंगी, ... और सब लोगों, और कुलों, और भाषाओं, और जातियों में से लोग उनकी लोथें साढ़े तीन दिन तक देखते रहेंगे, और उनकी लोथें कब्र में रखने न देंगे। और पृथ्वी के रहने वाले, उनके मरने से आनन्दित और मगन होंगे, ... (आयतें 7-10)।

अन्त में, हम भलाई की जीत देखते हैं:

> और साढ़े तीन दिन के बाद परमेश्वर की ओर से जीवन की आत्मा उन में पैठ गई; और वे अपने पांवों के बल खड़े हो गए, और उन के देखने वालों पर बड़ा भय छा गया। और उन्हें स्वर्ग से एक बड़ा शब्द सुनाई दिया कि यहां ऊपर आओ; यह सुन वे बादल पर सवार होकर अपने बैरियों के देखते-देखते स्वर्ग की ओर चढ़ गए। फिर उसी घड़ी एक बड़ा भुईंडोल हुआ, ... और उस भुईंडोल से सात हज़ार मनुष्य मर गए ... (आयतें 11-13)।

पहली शताब्दी के मसीही लोगों के नाम तीन भाग वाले इस संदेश के महत्व पर अधिक बल नहीं दिया जा सकता। रोम की पूरी शक्ति उनके विरुद्ध थी। मसीही लोग ''दिन भर घात किए जाते'' और ''वध होने वाली भेड़ों की नाईं गिने'' जाते थे (रोमियों 8:36)। घृणित पराजय सन्निकट लगती थी; मसीहियत का खात्मा स्पष्ट दिखाई दे रहा था। परमेश्वर के लोगों को यह आवश्यक संदेश सुनने की आवश्यकता थी कि चाहे कैसी भी स्थिति क्यों न हो, नियन्त्रण परमेश्वर के हाथ में ही है। विश्वासी बने रहें तो अन्त में विजय उन्हीं की होगी!

यह संदेश आज भी लोगों की आवश्यकता है। अधिक समय नहीं हुआ जब पूर्वी यूरोप के एक देश में धार्मिक स्वतन्त्रता पर फिर से रोक लगा दी गई थी। वहां मसीही लोग घटनाओं को बदलने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। वे विरोध कर रहे हैं, ''इसके लिए तो हम लगातार परमेश्वर से प्रार्थना करते थे। हमारे साथ ऐसे कैसे हो सकता है?'' उन्हें यह समझने की आवश्यकता है कि इस जीवन में कई बार लगता है कि दुष्ट शक्तियां जीत रही हैं, परन्तु *अन्त में* विजय भलाई की शक्तियों की ही होगी।

प्रकाशितवाक्य का संदेश आज भी धार्मिक स्वतन्त्रता वाले देशों की आवश्यकता है।

नैतिक मापदण्डों के गिरने, हिंसा के बढ़ने और हमारे समाज की नींवों के भ्रष्ट होने को देखकर हम परेशान हो सकते हैं। निराशा से अपने आप को न स भालें, तो हमें लग सकता है कि हम हार मान लें या छोड़कर चले जाएं। यह अहसास करना कितना आवश्यक है कि दुष्ट की कोई भी विजय केवल *छलावा* है और वह थोड़ी देर की ही है! अन्त में विजय भलाई की ही होगी!

मेरे एक परिचित का रहस्यों को पढ़ने का बड़ा अजीब तरीका है: पहले वह यह देखने के लिए कि रहस्य सुलझा कैसे, पुस्तक के *अन्त* से पढ़ना आर भ करता है। हम में से कई लोग पुस्तक के अन्त को जानना *नहीं* चाहते। हम उस पुस्तक को पहले पढ़ चुके लोगों से विनती करते हैं, ''कृपया अभी से यह मत बताना कि इसका अन्त कैसे होता है।'' इसके विपरीत भलाई और बुराई के युद्ध के बारे में हम जानना चाहते हैं कि यह ''समाप्त कैसे हुआ'' और इसी कारण परमेश्वर ने पवित्र शास्त्र में इसे अन्तिम पुस्तक में शामिल किया है। एक और आदमी, जिसे मैं जानता हूं वह खीझते हुए कहता है, ''मैंने बाइबल के पीछे देख लिया है, तुम बताओ भला वह क्या है? हम विजयी हो जाते हैं!''

बार-बार आने वाला संदेश

यह सुनिश्चित करने के लिए कि हम प्रकाशितवाक्य के विजय संदेश से चूक न जाएं, पवित्र आत्मा ने इसे बार-बार, कम से कम सात बार बताया।

पहले-पहले बहुत से लोग प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के दृश्यों की व्या या कालक्रम के अनुसार करने की कोशिश करते थे। इन लोगों के लिए पुस्तक के उन भागों को समझाना कठिन हो जाता था, जो कालक्रम के अनुसार नहीं हैं। उदाहरण के लिए अध्याय 12 वाली ''स्त्री जो सूर्य ओढ़े हुए थी'' (आयत 1) ''बेटा जनी, जो लोहे का दण्ड लिए हुए, सब जातियों पर राज्य करने पर था'' (आयत 5)। ''लोहे का दण्ड लिए हुए, सब जातियों पर राज्य करने'' की बात भजन संहिता 2 से ली गई है, जो नये नियम के लेखकों द्वारा यीशु पर लागू किया जाने वाला मसीहा से स बन्धित भजन है (प्रेरितों 13:33; इब्रानियों 1:5; 5:5)। 12:5 की बात यीशु के जन्म का स्पष्ट संकेत लगती है; परन्तु यदि प्रकाशितवाक्य कालक्रम के अनुसार है, तो यीशु के जन्म के बारे में आधी पुस्तक निकल जाने के बाद क्यों मिलता है?

इसके अलावा पुस्तक कभी-कभी समय में पीछे और कभी आगे उछलती प्रतीत होती है। एक उदाहरण दुष्ट नगर बाबुल का है। बाबुल के गिरने की घोषणा अध्याय 14 में की गई है, जैसे कि यह पहले ही हो चुका हो, परन्तु अध्याय 18 तक वास्तव में बाबुल का परिचय नहीं मिलता। एक उदाहरण यह है कि पुस्तक बार-बार इतिहास का सार दिखाती है। आर. सी. एच. लैंसकी ने लिखा है कि ''सात अलग-अलग जगहों में प्रकाशितवाक्य की पुस्तक संसार के अन्त तक पहुंच जाती है: 6:12-17; 7:9-17; 11:18; 14:4-20; 16:17-21; 19:11-21; 20:7-15.''[2]

प्रकाशितवाक्य के हम पीछे-और-आगे, यहां-फिर-वहां के ढंग की व्या या कैसे कर सकते हैं? बेहतरीन व्या या यह लगती है कि ''पुस्तक अपने अलग-अलग भागों में अलग-अलग पहलुओं के अधीन उसी काल और उन्हीं घटनाओं को देखती है।''[3] विलियम हैंड्रिक्सन ने सुझाव दिया है कि प्रकाशितवाक्य के सात भाग हैं कि ''भाग समानान्तर चलते हैं'' और ''प्रत्येक में मसीह के पहले और द्वितीय आगमन से स पूर्ण [मसीही] युग को समेटा गया है।''[4]

प्रकाशितवाक्य को वादियों और पहाड़ों की शृंखला माना जा सकता है, जिसमें यात्रा के अन्त में सबसे ऊंचा (और सबसे भव्य) पहाड़ है। पुस्तक में यात्रा करते हुए, अधिकतर समय वादियों में, परीक्षाओं और विपत्ति से जूझते हुए बीतेगा। परन्तु समय-समय पर हमें चोटी पर खड़े होने की अनुमति मिलेगी, जहां हमें उस महिमा की झलक मिल सकती है, जो हमें मिलने वाली है। इस तरह हमें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

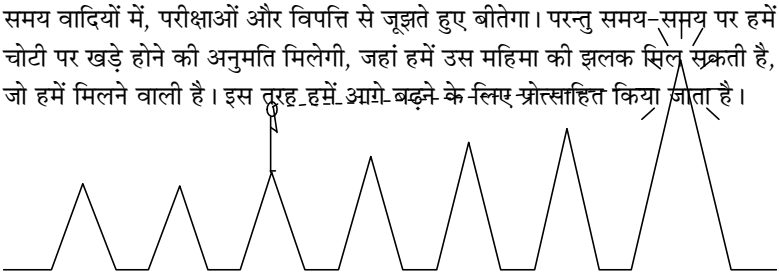

प्रत्येक भाग में हमें वही मूल संदेश मिलता है: (1) बुराई और भलाई में झगड़ा, (2) भलाई की दिखाई देने वाली पराजय और (3) अन्त में भलाई की विजय।

एकरूप संदेश

यद्यपि पुस्तक के कई भाग हैं, परन्तु इन्हें अलग-अलग इकाइयों के रूप में नहीं माना जाना चाहिए। पहली नज़र में प्रकाशितवाक्य में आपस में स बन्ध न रखने वाले दृश्य की उलझाने वाली सूची लगती है; परन्तु अध्ययन जारी रखने पर आपको पुस्तक के संदेश में अद्‌भुत एकता और समन्वय मिलेगा।

इस एकता को पुस्तक के आगे बढ़ने के साथ बनने वाले विषयों के द्वारा पाया जाता है। उदाहरण के लिए *वेदी के नीचे* पवित्र लोगों (शहीदों) के विषय पर विचार करें। 6:9-11 में इन पवित्र लोगों का परिचय दिया गया है, जहां वे बदला लेने के लिए पुकारते हुए कहते हैं कि ''हे स्वामी, ... कब तक ... ?'' (आयत 10)। 8:3-5 में एक स्वर्गदूत पवित्र लोगों की प्रार्थनाओं में धूप मिला देता है और फिर *वेदी से* पृथ्वी पर आग फैंकता है; बदला लेना आर भ हो चुका है। 14:7-20 में *वेदी से* एक स्वर्गदूत आकर आज्ञा देता है कि हंसुआ (बदले का) पृथ्वी में लगाया जाए; फिर लहू बहने लगता है। अन्त में, 16:5-7 में *वेदी से*

एक पुकार पवित्र लोगों की हत्या करने वालों के दण्ड से सहमत होती है: ''वे इसी योग्य हैं!'' (देखें आयत 6)।

इस भाग में आगे और अगली पुस्तक में हम देखेंगे कि प्रकाशितवाक्य के कई विषय अध्याय 2 और 3 वाली सात कलीसियाओं के नाम पत्रों में बताए गए हैं।

संदेश तैयार हुआ

प्रकाशितवाक्य में विजय के तिहरे संदेश को ध्यान में रखते हुए, आइए पुस्तक की रूपरेखा बनाकर जल्दी से इसमें घूम लें।

एक सरल रूपरेखा

बहुत से टीकाकार इस बात से सहमत हैं कि पुस्तक स्वाभाविक ही ग्यारह अध्यायों के थोड़े-बहुत अन्तर वाले दो भागों में बंट जाती है।[5] अध्याय 12 स्पष्ट विभाजक बिन्दु लगता है, क्योंकि (जैसे पहले कहा गया) ऐसा लगता है जैसे यह अध्याय यीशु के जन्म के वृत्तांत से कहानी को फिर से आर भ करने वाला है।

दूसरी ओर यह सहमति नहीं मिलती कि दो मु य विभाजनों को आगे कैसे विभाजित किया जाए। वृत्तांत में काफ़ी सामग्री की आवश्यकता पड़ेगी: सात कलीसियाओं के नाम पत्र (2; 3), सात मुहरों वाली पुस्तक (4-7), सात तुरहियां (8-11), और क्रोध के सात कटोरे (15; 16)। एक रूपरेखा में इन भागों को इस प्रकार इकट्ठे किया जा सकता है:

I. मसीह सात कलीसियाओं के बीच है (1-3)।
II. सात मुहरों वाली पुस्तक (4-7)।
III. सात तुरहियां बजना (8-11)।
IV. कलीसिया के शत्रुओं का परिचय (12-14)।
V. क्रोध के सात कटोरे (15; 16)।
VI. कलीसिया के अधिकतर शत्रुओं का विनाश (17-19)।
VII. अजगर के विनाश के बाद नया आकाश और नई पृथ्वी (20-22)।

यह रूपरेखा मुझे कई कारणों से पसन्द है। पहला कारण यह है कि यह बड़ी आसान है। इसके अलावा इसके सात भाग हैं और पुस्तक का मु य अंक भी सात है। पुस्तक के पहले भाग में तीन विभाजन और दूसरे भाग में चार विभाजन मिलते हैं। कुछ चीज़ों का तीन और चार के समूहों में बंटना प्रकाशितवाक्य की विशेषता है। हर भाग में पाठ को प्रोत्साहित करने के लिए ''चोटी पर जाना'' मिलता है। मेरा सुझाव है कि आप इस रूपरेखा को मन में रखें। ऐसा करने से आप अलग-अलग प्वाइंटों को नीचे पुस्तक के अलग-अलग भागों से मिला सकते हैं।

संक्षिप्त समीक्षा

मैं जल्दी से आपको प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की सैर करा दूं। विशेष ध्यान दें कि तिहरे संदेश को बार-बार क्यों दोहराया गया:

I. मसीह सात कलीसियाओं के बीच में है (1-3)। अध्याय 1 में दीवटों के बीच जिन्हें सात कलीसियाओं के रूप में दिखाया गया है, मसीह के चलने का दर्शन है। 2 और 3 अध्याय सात कलीसियाओं के नाम पत्र हैं। उन पत्रों को पढ़कर हम भलाई और बुराई में झगड़े को देखते हैं और बुराई विजयी हो रही लगती है (2:10, 13)। परन्तु यीशु विश्वासी रहने वालों से अद्‌भुत प्रतिज्ञाएं करता है (2:7, 11, 17) कि वह दुष्टों को दण्ड देने (2:16) और विश्वासियों को प्रतिफल देने (3:12) वापस आएगा (3:3)!

II. सात मुहरों वाली पुस्तक (4-7)। 4 और 5 अध्यायों वाला सिंहासन पुस्तक के शेष भाग के लिए मंच तैयार करता है। नियन्त्रण रोम के पास नहीं, बल्कि परमेश्वर के पास है! मुहरें खोले जाने पर, पहली चार मुहरें (चार घुड़सवार) भलाई और बुराई में झगड़े को दर्शाती हैं (6:1-8)। पांचवीं मुहर खोले जाने पर हम वेदी के नीचे शहीदों को देखते हैं, जिनका बदला नहीं लिया जा रहा (6:9-11); ऐसा लगता है कि शैतान जीत गया है। फिर एक बड़ी विपत्ति आती है (6:12-17), परन्तु परमेश्वर के सेवकों को मुहर के साथ बचा लिया जाता है (7:1-8)। अन्त में उन्हें स्वर्ग में दिखाया जाता है (7:9-17)। परमेश्वर जीत गया है!

III. सात तुरहियों का बजना (8-11)। पहली छह तुरहियों से पृथ्वी पर आने वाली महामारी की घोषणा होती है (8:2-9:21)। फिर बताया गया है कि पवित्र लोगों को सताने के लिए संसार को किस बात ने उकसाया: कड़वे संदेश से वचन ने (10:1-11)। इस भाग का सार दो गवाहों की कहानी है (11:1-13), जिनमें (जैसे पहले कहा गया है) हम झगड़ा, दिखाई देती पराजय और अन्त में विजय देखते हैं। यह भाग विजय के साथ समाप्त होता है (11:14-19)।

IV. कलीसिया के शत्रुओं का परिचय (12-14)। अध्याय 12 बड़े लाल अजगर जिसे शैतान कहा गया है, का परिचय देता है (आयत 9)। शैतान जब यीशु को नष्ट नहीं कर सका, तो उसने परमेश्वर के लोगों के साथ युद्ध किया है (यहां बुराई के साथ लड़ाई देखने को मिलती है; आयत 17)। अध्याय 13 में शैतान के दो सहकर्मियों का परिचय दिया गया है: समुद्र का पशु (आयतें 1-10) और पृथ्वी का पशु (आयतें 11-18)।[6] पहला पशु पवित्र लोगों के साथ युद्ध करके उन पर अधिकार पा लेता है (आयत 7)। ''अधिकार'' यूनानी शब्द का अनुवाद है जिसका अर्थ ''विजय पाना'' है; यहां भलाई की पराजय दिखाई देती है। निराश होने से पहले, अध्याय 14 हमें भलाई की विजय और बुराई के दण्ड के एक से एक दर्शनों के लिए चोटी पर ले जाता है!

V. क्रोध के सात कटोरे (15; 16)। हमारे आत्मिक शत्रुओं का परिचय देने के बाद प्रकाशितवाक्य क्रोध के सात कटोरों वाले ''सात'' की बार-बार आने वाली स्थायी में लौट आता है। यह भाग संदेश के तीसरे भाग अर्थात धार्मिकता की अन्तिम विजय (15:2-4)

और दुष्ट को दण्ड (15:1, 5-8; 16:1-21) की ओर सीधे आगे बढ़ जाता है। एक ऊंची आवाज़ घोषणा करती है "हो चुका" (16:17)।

VI. कलीसिया के अधिकतर शत्रुओं का विनाश (17-19)। एक चौथे शत्रु अर्थात उस बड़े बाबुल का परिचय दिया गया है (17:5)।[7] यह भड़कीली वेश्या "पवित्र लोगों का लहू और यीशु के गवाहों का लहू पीने से मतवाली" हुई है (17:6; 18:24 भी देखें)। झगड़ा हुआ है और स्पष्टतया भलाई की पराजय हुई है। शैतान के तीन सहकर्मी पहले दिए उनके परिचय के उलट क्रम में बारी-बारी से जल्दी-जल्दी गिरते हैं। पहले, बड़े बाबुल का विनाश दिखाया गया है (18:1-19:4)। फिर न्यायी और बदला लेने वाले यीशु के आने पर, दोनों पशुओं (पशु और झूठे भविष्यवक्ता) को "उस आग की झील में, जो गंधक से जलती है" डाल दिया गया (19:20)।

VII. अजगर के विनाश के बाद नया आकाश और नई पृथ्वी (20-22)। अध्याय 20 का उद्देश्य हज़ार वर्ष के राज्य के विषय में बताना नहीं, बल्कि बड़े लाल अजगर के फैंके जाने को दिखाना है। हम झगड़े और स्पष्ट पराजय के बारे में पढ़ते हैं: यूहन्ना देखता है कि "जिनके सिर यीशु की गवाही देने और परमेश्वर के वचन के कारण काटे गए थे और जिन्होंने न उस पशु की और न उस मूर्ति की पूजा की थी, और न उसकी छाप अपने माथे और हाथों पर ली थी" (आयत 4)। परन्तु इस दृश्य में विजय दिखाई गई है: "उनका भरमाने वाला शैतान आग और गंधक की उस झील में, जिसमें वह पशु और झूठा भविष्यवक्ता भी होगा, डाल दिया जाएगा; और वे रात-दिन युगानुयुग पीड़ा में तड़पते रहेंगे" (आयत 10)। फिर प्रकाशन न्याय के एक दृश्य (20:11-15) और स्वर्ग के भव्य दर्शन (21:1-22:15) के साथ समाप्त हो जाता है। *भलाई की शक्तियां विजयी हुई हैं!*

सारांश

इसी के साथ अध्ययन की हमारी पृष्ठभूमि पूरी हुई। अब प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के बारे में आप क्या सोचते हैं? मुझे उ मीद है कि आप यह सोच रहे हैं कि "इसे समझना *कठिन* तो हो सकता है, परन्तु *अस भव* नहीं।" "कठिन" और "अस भव" शब्दों में बहुत अन्तर है। उतना ही जितना "मैं कोशिश ही क्यों करूं?" और "यदि मुझे सचमुच चाहिए तो मैं कोशिश कर सकता हूं!" में।

उ मीद है कि आप प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को समझना *चाहते* हैं और आप इसकी सच्चाइयों से आशीषित होना चाहते हैं। जॉनी रैमसे को प्रकाशितवाक्य की संक्षिप्त समीक्षा देने की चुनौती दी गई थी। उन्होंने बार-बार इस पुस्तक को पढ़ा और इसका अध्ययन किया। उन्होंने इसे पढ़ाया और इस पर लिखा है; परन्तु हर बार उन्होंने प्रकाशितवाक्य को ऐसे पढ़ा, जैसे पहली बार पढ़ रहे हों। बाद में उन्होंने लिखा, "इस अध्ययन में सबसे अच्छी बात जो मैंने सीखी है, वह यह है कि परमेश्वर आज भी मनुष्यों में राज करता है और मेरा भविष्य उसी के हाथ में है।"[8]

प्रकाशितवाक्य से कई बड़े सबक हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। मैं वचन के अध्ययन की प्रतीक्षा कर रहा हूं। उ मीद है कि आप भी कर रहे होंगे!

टिप्पणियां

[1]''भलाई की स्पष्ट पराजय'' के विचार को ''बुराई की स्पष्ट पराजय'' में भी व्यक्त किया जा सकता है। [2]आर. सी. एच. लैंसकी, *द इंटरप्रिटेशन ऑफ सेंट जॉन 'स रैवलेशन* (मिनियापोलिस, मिनेसोटा: ऑग्स्बर्ग पब्लिशिंग हाउस, 1963), 24. [3]फ्रैंक पैक, *रैवलेशन,* पार्ट 1 (ऑस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1965), 17. [4]विलियम हैंड्रिक्सन, *मोर दैन कंकरर्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1954), 25. [5]कुछ लोगों का सुझाव है कि पहला भाग भलाई और बुराई में ऊपरी झगड़े (कलीसिया बनाम संसार) पर केन्द्रित है, जबकि दूसरा भाग धरातल के नीचे के युद्ध (मसीही बनाम शैतान) पर अधिक ध्यान देता है। [6]समुद्र के पशु को बाद में केवल ''पशु'' कहा गया है (14:9), जबकि पृथ्वी के पशु को झूठा भविष्यवक्ता बताया गया है (16:13)। अभी के लिए केवल उन शक्तियों के बारे में सोचें, जो मसीहियत का विरोध करती हैं। [7]यह छोटा प्रश्न लगता है कि यह रोम शहर है (17:9, 15, 18)। [8]जॉनी रैमसे, ''द बुक ऑफ़ रैवलेशन–ए समरी,'' *स्टडीज़ इन द रैवलेशन: द थर्ड एनुअल डैंटन लैक्चर्स* (1984): 37.

विचार एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की विषय-वस्तु क्या है?
2. पुस्तक का तिहरा संदेश क्या है?
3. पाठ के अनुसार, प्रकाशितवाक्य में यह तिहरा संदेश कितनी बार दिया गया है?
4. क्या आपको लगता है कि यह संदेश आज भी उस देश के लिए आवश्यक है, जिसमें आप रहते हैं? और क्यों?
5. पाठ में दी गई प्रकाशितवाक्य की रूपरेखा की नकल करने की कोशिश करें।
6. आपको प्रकाशितवाक्य के बारे में अब तक सीखी गई सबसे महत्वपूर्ण बात क्या लगती है?
7. आपने ऐसा क्या सीखा है, जो व्यक्तिगत रूप से आपके लिए सहायक हो?
8. अगले टैक्सचुअल अध्ययन से आपको क्या सीखने की उ मीद है?

दो गवाह (11:3)

''उनके शव चौक में पड़े रहेंगे'' (11:8)

''वे बादल पर सवार होकर ... स्वर्ग पर चढ़ गए'' (11:12)